ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

चन्द्रगुप्त नाटक का आधुनिक संदर्भ

Modern Reference To Chandragupta Drama

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

रामाश्रय सिंह
वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

चन्द्रगुप्त नाटक का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनता को नवजागरण का नवीन संदेश देना रहा है। ताकि भारतीय जनता में स्वतंत्रता संग्राम की पूरी निष्ठा और लगन–जाग जाये। कारण कि अंग्रेज अजेय नहीं हैं? उन्हें हराया जा सकता है। अंग्रेज कहीं से श्रेष्ठ नहीं हैं? भारत का प्राचीन इतिहास अत्यन्त समृद्ध, शक्तिशाली और प्रत्येक दृष्टि से महान रहा है। अपनी श्रेष्ठता की यह अनुभूति ही भारतीयों को दृण आत्मविश्वास से भर अंग्रेजों से सामना करने में समर्थ बना सकेगी। इस अनुभूति को जागृत करने के लिये ही प्रसाद जी ने सन् 1931 में चन्द्रगुप्त नाटक का रचना की थी।

यानी भारत के अतीत, वर्तमान व भविष्य को आधुनिक संदर्भ से जोड़ने का प्रयास किया है। जैसे– हम क्या थे, क्या हो गये हैं? और क्या होगें? अपने अन्दर झाँकने के लिए प्रेरित करता है। यही नाटक का सार है।

The main objective of Chandragupta drama is to give a new message of renaissance to the Indian public. So that the Indian public will have full devotion and dedication in the freedom struggle. The reason that the British are not invincible? They can be defeated. Englishmen are not superior from anywhere? The ancient history of India has been very rich, powerful and great in every respect. This realization of his superiority will enable Indians to face the British with full confidence. In order to awaken this feeling, Prasad ji composed the play Chandragupta in 1931.

That is, we have tried to connect India's past, present and future with modern context. Like - what have we been, what has happened? What else will happen? Motivates you to look inside yourself. This is the essence of the play.

मुख्य शब्द : क्रूर, उन्मूलन, कर्मशक्ति, इच्छाशक्ति, स्नेहाकुल, निष्कंटक आदि।
Cruel, Elimination, Work-Force, Willpower, Affectionate, Flawless, etc.

प्रस्तावना

चन्द्रगुप्त में प्राचीन काल के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम का जिक्र है। जब भारत पर विदेशी आक्रमण हो रहा था। भारत के राजा परस्पर द्वेष, लालच, अहंकार, और विलास के मायाजाल में फंसे विदेशियों की सहायता कर रहे थे। जैसे अम्भीक का विलासीपन! अपनी प्रजा को क्रूर दमन में लगाना, तो दूसरी तरफ चाणक्य, चन्द्रगुप्त, सिंहरण, अलका आदि ने देश को बचाया। पहली योजना बुद्ध के तरीके से, विदेशियों से देश की रक्षा करने की रही थी। बाद में नन्द जैसे क्रूर विलासी, देशी शासकों का उन्मूलन कर सुशासन की स्थापना की थी। इस प्रकार इन देश भक्तों को देशी और विदेशी, दोनों प्रकार के दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ा था। प्रमुख घटनाएँ तीन हैं– सिकन्दर का आक्रमण, नन्द वंश का नाश, सिल्युकस का प्रभाव।

उपकल्पना

1. व्यक्ति के अन्दर संवेदनशील, इच्छाशक्ति, विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति, कर्मशक्ति, रचनाशक्ति आदि शक्ति निहित हैं। जो प्रकृति की मूल्यवान देन हैं। पर मनुष्य का जीवन बड़ा टेढ़ा–मेढ़ा, उलझा हुआ, आपत्तियों से घिरा हुआ, विषम परिस्थितियों से भरा हुआ है। कल्पना के माध्यम से समाधान दिया है।
2. उपकल्पना का कारण है कि प्रेमचन्द जी अपने पाठकों को ज्ञान में देखना चाहते हैं। तो प्रसाद जी अपने पाठकों को भाव में देखते हैं।
3. भारत परतंत्र था। ब्रिटिश साम्राज्य का दमन उत्पीड़न तथा शोषण सर्वत्र व्याप्त था। मुक्ति का रास्ता तलाशते हैं।

4. उस समय भारतीय समाज तथा संस्कृति का रूप विकृत किया जा रहा था। विदेशी भाषा राजभाषा के पद पर सुशोभित थी। भारतीय शिक्षा अपनी परम्परा से हटकर पाश्चात्य जीवन मूल्यों से जुड़ी थी। वातावरण ठीक नहीं था।
5. भारतीय शिक्षा अपनी परम्परा से हटकर पाश्चात्य जीवन मूल्यों से जुड़ी थी। कितना हास्याद्पद दिखता है।
6. धर्म की रचनात्मक तथा नैतिकता की पवित्रता स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों से आक्रान्त हो रही थी।
7. देश में गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा था।
8. भारतेन्दु जी हिन्दी भाषा के महत्व को बता रहे थे।
9. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वभाषा, स्वराज, एवं स्वधर्म का संदेश दे गये थे।

शोध पद्धति

1. जयशंकर प्रसाद ने ऐसे समय में ऐसे ऐतिहासिक इतिवृत्त को नाट्य रचना के लिए चयन किया, जो अपनी मूल भावना, कार्यशैली, तथा प्रभाव प्रक्रिया में खोई हुई राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लिए प्रेरक तथा प्रोत्साहक सिद्ध हो सके। तब उन्होंने नाटकों की रचना किया, विशेषकर चन्द्रगुप्त, स्कन्धगुप्त व ध्रुवस्वामिनी आदि।
2. साम्राज्यवादी परिवेश से भारतीय संस्कृति, शिक्षा साहित्य व व्यवसायों का जातीय स्वरूप तथा गौरव लुप्त हो गया था। ऐसे परिस्थिति में राष्ट्रीय चरित्र के लोक–नायकों तथा लोक पुरुषों की आवश्यकता थी। अन्वेषणात्मक शोध पद्धति है।

साहित्यावलोकन

चन्द्रगुप्त नाटक का विस्तार प्राथमिक घटनाओं से पता चलता है। मगध की राजधानी पाटलिपुत्र गंगा के संगम पर थी। राजधानी में किसी उपयोगी वस्तु का अभाव नहीं था। उस समय वहाँ का राजा महापद्म था। पुराणों में वर्णित अखिल क्षत्रिय–विनासकारी महापद्म नन्द या कालाशोक के लड़कों में सबसे बड़ा था। जो एक नीच स्त्री से उत्पन्न हुआ था। मगध छोड़कर किसी अन्य प्रदेश में रहता था। अपने अपमान का बदला लेने के लिए डाकुओं के दल में मिल गया। जब उनका सरदार चढ़ाई पर मारा गया, तो वहीं राजकुमार उन सबों का नेता बन गया। पाटलिपुत्र पर चढ़ाई कर दिया। पाटलिपुत्र का अधिकार छीन लिया। आठों भाईयों ने राज्य किया।[1]

कहना न होगा नवें नन्द का नाम धननन्द था। गंगा घाट बनवाया। गंगा की धारा को कुछ दिन के लिये मोड़ दिया। हालांकि गंगा की धारा मोड़ने का आशय यह कि अपना भारी खजाना गाड़ दिया। तब लोग उसे धननन्द कहने लगे। धननन्द के क्षेत्र में एक दिन तक्षशिला निवासी चाणक्य आया। वह आया तो जरूर लेकिन सबसे ऊँचे आसन पर बैठ गया। जिसे देखकर धननन्द चिढ़ गया। अपमानित करके निकाल दिया। धननन्द की नाश की नींव यहीं पड़ती है। नन्द बहुत विलासी था। विलासी का अर्थ ही होता अभिलाषी। अहंकार में आकण्ठ डूबा हुआ क्रूर। इसका प्रभाव यह पड़ा की प्राचीन मंत्री शकटार को बन्दी करके वररूचि नामक ब्राह्मण को अपना मंत्री बना लिया। मगध के निवासी उपवर्ष के दो शिष्य थे। पाणिनि तक्षशिला में विद्याभ्यास करने गया था। वररूचि जिसकी राक्षस से मैत्री थी, नन्द का मंत्री बना। जब शकटार मंत्री, बंदी हुआ, तब वररूचि ने उसे छुड़ाया। कुछ दिन बाद वहीं दशा मंत्री वररूचि की भी हुई। जिसका नाम कात्यायन पड़ा। बौद्ध लोग इन्हें ब्रह्म बन्धु लिखते हैं। ध्यान रहे यही पाणिनि के सूत्रों के यही वर्तिककार कात्यायन है। कितने लोगों का मत भिन्न है कि कात्यायन और वररूचि भिन्न–भिन्न व्यक्ति थे।[2]

जाहिर है कि बैर का बदला बैर से खत्म होता है। शकटार ने अपने बैर का समय पाया। नन्दों में आन्तरिक द्वेष फैलाकर एक के बाद दूसरे को राजा बनाने लगा। नन्द वंश का पतन होने लगा, केवल अंतिम नन्द वंश बचा। सावधानी से अपना राज्य सम्भाला। वररुचि को फिर मंत्री बनाया। शकटार ने भी अवसर को हाथ से जाने नहीं दे रहा था। चाणक्य को मिलाकर जो नीतिशास्त्र विशारद होकर गार्हस्थ्य जीवन में प्रवेश करने के लिए राजधानी में आया था, नन्द का विरोधी बना दिया। वह क्रुद्ध ब्राह्मण अपनी खोई प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए सहायक ढूँढ़ने लगा। वही पाटलिपुत्र में पिप्पली कानन के मौर्य सेनापति का एक विभव हीन गृह था। महापद्म नन्द के अत्याचार से मगध काँप रहा था। मौर्य सेनापति बन्दी था। उसका परिवार दुःखी था। एक बालक उसी घर के सामने खेल रहा था, उस बालक में बहुत प्रतिभा थी। उसी ओर से चाणक्य जा रहे थे। वह बालक लड़कों का राजा बना था। बचपन के खेलों का राजा है। चाणक्य ने विनोद भाव में कहा राजन मुझे दुध पीने के लिए गऊ चाहिए। बालक ने राजोचित उदारता का अभिनय करते हुए कहा– सामने चरती हुई गायों को दिखाकर कहा जितनी इच्छा हो उतनी ले लो। बाह्मण ने हँसकर कहा– राजा मारने लगेगा तब क्या करोगे। बालक ने सगर्व छाती फुलाकर कहा किसका साहस है जो मेरे शासन को न माने? राजा की आज्ञा माननी पड़ेगी? तब ब्राह्मण ने बालक का नाम पूछा और आशीर्वाद देकर चाणक्य चले गये। आगे और बात जुड़ती है माँ बालक को लेकर नन्द के सभा में चली जाती है। सभा में बुद्धि का अनुमान करने के लिए, लोहे के बन्द पिजड़े में मोम का सिंह बनाकर भेजा गया था। शर्त थी कि पिजड़े को खोले बिना ही सिंह को निकालना है। भारत वंश का लाल ने लोहे की शलाकों को गरम करके उस सिंह को गला कर पिजड़े को खाली कर दिया। यह विवरण पुष्ट करता है कि चन्द्रगुप्त पहले से ही राजानन्द के सभा में रहता था। इस प्रकार चन्द्रगुप्त नाटक में पात्र परिचय को देखा जाय तो नाटक साफ दिखाई देने लगेगा। जयशंकर प्रसाद का उद्देश्य भी स्पष्ट हो जायेगा, जैसा कि पहले ही नाटका का उद्देश्य बता दिया है। चाणक्य जिसका नाम विष्णुगुप्त है। उसके और कई नाम हैं। पर प्रमुख नाम विष्णुगुप्त ही है। जो मौर्य साम्राज्य का निर्माता है। दूसरा पात्र चन्द्रगुप्त है, वह सम्राट है। जब भारत का सम्राट बनता है। उस समय भारत का स्वर्ण युग काल था। जैसा कि प्लिनी कहता है कि– भारत में मनुष्य पाँच वर्ग के हैं– एक जो लोग राजसभा

में कार्य करते हैं, दूसरे सिपाही, तीसरे व्यापारी, चौथे कृषक और पॉचवाँ वर्ग भी है जो कि दार्शनिक कहलाता है।[3] यही नहीं भारत की जमीन उर्वरा थी। कृत्रिम जल स्रोत थे। प्राकृतिक बड़ी–बड़ी नदियां थी। एक बार में दो बार अन्न काटे जाते थे। कृषक लोग बहुत शान्तिप्रिय होते थे। युद्ध आदि के समय में भी कृषक लोग आनन्द से हल चलाते थे। चतुर्थांश राजा कोष में जाता था– चारों तरफ खुशहाली थी। जानवर भी यहाँ अनेक प्रकार के होते थे। जैसा कि कहा है चौपाये यहाँ जितने सुन्दर और बलिष्ठ होते थे, वैसे अन्यत्र नहीं। यहाँ के सुन्दर बैलों को सिकन्दर ने यूनान भी भेजा था। जानवरों में जंगली और पालतू दोनों मिलते थे। पक्षी भी भिन्न–भिन्न प्रदेशों में बहुत प्रकार के थे। जो अपने घोंसलों में बैठ कर भारत के सुस्वाद फल खाकर कमनीय कण्ठ से उसकी जय गान करते थे। धातु भी यहाँ प्रायः सब उत्पन्न होते थे। जिसका प्रयोग अस्त्र–शस्त्र, साज, आभूषण इत्यादि में प्रस्तुत होते थे। शिल्प यहाँ का उन्नत अवस्था में था। व्यवसायी सब प्रकार के कर से मुक्त होते थे। राजा भी सहर्ष स्वीकृति देता था। क्या गजब का विधि–विडम्बना है। शिल्प की वस्तुओं को देखकर यूनानियों ने कहा था कि भारत की राजधानी पाटलिपुत्र को देखकर पोरस की राजधानी कुछ भी नहीं प्रतीत होती। इन सब चीजों की गरिमामय उपस्थिति देखकर कहा जा सकता है कि भारत कभी भी गुलाम नहीं रहा है, हमेशा से मुक्त रहा है। इसी क्रम में नन्द मगध सम्राट था, जोकि महाविलासी, क्रूर, अहंकारी था। राक्षस उसका मुख्य मंत्री था। वररूचि (कात्यायन) मगध का मुख्य मंत्री था। शकटार मगध का मंत्री था। शकटार को हटाकर ही नन्द ने वररूचि को मुख्य मंत्री बनाया था। अम्भीक तक्षशिला का राजकुमार था। तक्षशिला यानी गुरुकुल का मठ प्रथम अंक में चाणक्य और सिंहरण का संवाद है। पर्वतेश्वर पंजाब का राजा (पोरस) है। सिंहरण मालवगण का राजकुमार है। वहीं सिकन्दर ग्रीक–विजेता है। फिलिप्स सिकन्दर का क्षत्रय। मौर्य–सेनापतिः चन्द्रगुप्त का पिता है। एनीजा क्रीटीज सिकन्दर का सहचर है। देववल, नागदत्त, गणमुख्य मालव गणतन्त्र के पदाधिकारी हैं। साइबर्टियस, मेगास्थनीज यवन दूत है। गान्धार–नरेश अम्भीक का पिता है। सिल्यूकस सिकन्दर का सेनापति है। दाण्डयायन एक तपस्वी है। इसी तरह स्त्री पात्रों का भी परिचय मिलता हे। अलका तक्षशिला की राजकुमारी है। सुवासिनी मंत्री शकटार की कन्या है। कल्याणी मगध नरेश की राजकुमारी है। नीला, पीला कल्याणी की सहेलियाँ हैं। मालविका सिन्धु देश की कुमारी है। कार्नेलिया–सिल्यूकस की कन्या है। मौर्य पत्नी चन्द्रगुप्त की माता है। एलिस कार्नेलिया की सहेली है।[4] ये सभी पात्र महत्वपूर्ण हैं।

कहना न होगा भारत में एक अखण्ड शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना करना है। चन्द्रगुप्त को राजा बनाना है। यह काम कैसे पूरा होगा, इसके पूरा होने में पहली बाधा सिकन्दर को भारत पर आक्रमण किया जाना है। नाटक के प्रथम अंक में संकेत मिलता है। सभी प्रधान पात्र चाणक्य, चन्द्रगुप्त, सिंहरण, अम्भीक और अलका सभी के अनुकूल–प्रतिकूल प्रयत्नों के फलस्वरूप सिकन्दर को अपनी भारत विजय की आकांक्षा को त्याग कर लौट जाना पड़ता है। यही सिंहरण और अलका को एक दूसरे के प्रति स्नेहाकुल हृदयों का भी आभास मिल जाता है– सिंहरण कहता है– मानव कब दानव से भी दुर्दान्त, पशु से भी बर्बर और पत्थर से भी कठोर, करुणा के लिये नीरवाकाश (हृदयवाला) हो जाएगा, नहीं जाना जा सकता। अतीत सूखों के लिए सोच क्यों, अनागत भविष्य के लिए भय क्यों? और वर्तमान को मैं अपने अनुकूल बना ही लूँगा। फिर चिन्ता किस बात की? अलका–मालव तुम्हारे देश के लिए तुम्हारा जीवन अमूल्य है। और वही यहाँ आपत्ति में है।[5] यहीं से देश रक्षा की इस भूमिका का विस्तार होता है इसके पहले मगध सम्राट का विलासी रूप सामने आता है। अत्याचारी रूप स्पष्ट होता है। चाणक्य और चन्द्रगुप्त तक्षशिला से पाटलिपुत्र पहुँचते हैं। दोनों बचपन के अनुभव से जुड़ जाते हैं। चाणक्य बाल रूची सुवासिनी को याद करता है। कल्याणी की रक्षा को चन्द्रगुप्त प्रकट कर नया परिचय बनाता है। चाणक्य और चन्द्रगुप्त में एक समानता मिलती है। दोनों के पिताओं को मगध से निर्वासित कर रखा है। इसलिये दोनों नन्द के विरोधी हैं। चाणक्य नन्द का विनाश करने की प्रतिज्ञा करता है। इसी प्रसंग में राक्षस, सुवासिनी और वररूचि सब आ जाते हैं।

राक्षस का बौद्ध प्रेम ब्राह्मण द्वेष बन जाता है। इसी क्रम में दूसरे अंक में पर्वतेश्वर और सिकन्दर की युद्ध की तैयारियों का प्रमाण मिलता है। कल्याणी का पुरुष वेष में आना, चन्द्रगुप्त, सिंहरण, चाणक्य, कल्याणी आदि मिलकर भी पर्वतेश्वर को पराजय से नहीं बचा पाते हैं। मानों वे सब वहाँ उसकी पराजय के साक्षी बनने के लिए ही उपस्थित हुए हैं। यहाँ बस महत्वपूर्ण बात काम की होती है। यवन सेना में यह अफवाह फैला दी जाती है कि मगध के लाखों सैनिक सिकन्दर का सामना करने के लिए तैयार हैं। यवन सेना में हड़कंप मच जाती है। यही अलका सिंहरण को छुड़ाने के लिए पर्वतेश्वर की रानी बनने के लिए तैयार हो जाती है। पर्वतेश्वर सिकन्दर का आदेश पाकर उसकी सहायता करने जाता है, समय भयंकर अलका भी राजमहल से भाग जाती है। इसके बाद भारत से लौटते हुए सिकन्दर पर आक्रमण करने की योजना बनती है। इसके पहले पर्वतेश्वर कहता है– यदि मैं सिकन्दर का विपक्षी बन जाऊँ तो तुम मुझे प्यार करोगी अलका? सच कहो।[6] यहीं से रणनीति बनती है। आक्रमण होता है, चाणक्य और राक्षस में कूटनीति संघर्ष होता है। घायल सिकन्दर संधि के लिए तैयार हो जाता है। भारतीय वीर उसे सकुशल लौट जाने की आज्ञा देता है।

कहना न होगा तृतीय अंक की कथा मोड़ लेती है। जो मगध की राजनीति से जुड़ती है। सिकन्दर अलका और सिंहरण के विवाह में उपस्थित होता है। जो सिकन्दर की लड़ाई का उपसंहार है। चाणक्य कूटनीति का प्रयोग कर राक्षस को नन्द के प्रति सशंकित बना देता है। दूसरी ओर अलका व सिंहरण के विवाह से पर्वतेश्वर दुःखी हो जाता है। भावी विनाश की ओर

संकेत है। कार्निलिया और चन्द्रगुप्त का प्रणय प्रसंग, फिलिप्स का चन्द्रगुप्त को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारना, फिलिप्स का वध इससे पहले नन्द की कामुकता, शकटार द्वारा नन्द का वध करवाकर चन्द्रगुप्त को सम्राट घोषित कर देता है। यहीं से चतुर्थ अंक की कथा अपने अंतिम लक्ष्य भारत को एक निष्कंटक अखण्ड राज्य की नींव पड़ती है। चाणक्य की कूटनीति काम आती है। पर्वतेश्वर को आधा राज पाने की इच्छा, कल्याणी का चन्द्रगुप्त की ह्रदेश्वरी बनने की लालसा। नाटककार प्रसाद जी ने पर्वतेश्वर और कल्याणी का मुठभेड़ कराकर कल्याणी द्वारा पर्वतेश्वर की हत्या करवा देता। कल्याणी चन्द्रगुप्त से प्रेम तो करती है, लेकिन चन्द्रगुप्त उसके पिता का दुश्मन है। वह आत्महत्या कर लेती है। चन्द्रगुप्त कार्निलिया से प्रणय सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। चाणक्य का उद्देश्य पूरा हो जाता है।

कार्निलिया कहती है सखी! मदिरा की प्याली में तू स्वप्न सी लहरों को मत आन्दोलित कर। स्मृति बड़ी निष्ठुर है। यदि प्रेम ही जीवन का सत्य है, तो संसार ज्वालामुखी है।[7] इस प्रकार चन्द्रगुप्त नाटक के कथानक संगठित नहीं हैं। चौथे अंक की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती है। नाटककार को उद्देश्य पहले ही स्पष्ट कर देना चाहिए था। उनकी भाषा अजायबघर जान पड़ती है। खिचड़ी भाषाओं का प्रयोग हिन्दी नाटकों के लिए ठीक नहीं है। पात्रों की संस्कृति के अनुसार भावों और विचारों में एकरूपता होनी चाहिए। खैर भाषा में परिवर्तन भी जरूरी है। जैसा कि– चन्द्रगुप्त तुम मालव हो और यह मगध, यही तुम्हारे मान का अवसान है।

अध्ययन का उद्देश्य

नाटककार का मूल उद्देश्य तो उस प्राचीन भारतीय शक्तिशाली, मौर्य साम्राज्य की स्थापना दिखाना रहा है। जिसने प्राचीन भारतीय इतिहास के उस गौरव शक्ति युग की नींव डाली थी। जो एक हजार वर्ष का लम्बा व्यवधान पार कर भारतीय का स्वर्ण युग कहलाया है।

निष्कर्ष

चन्द्रगुप्त प्रसाद जी का श्रेष्ठ नाटक है। चन्द्रगुप्त में राजनीतिक, दार्शनिक विचारों के गम्भीर भाव हैं। प्रसाद जी ने विदेशियों से संघर्ष में भारत की विजय दिखाकर, आधुनिक और पाश्चात्य शैली का निरूपण किया है। साथ ही ऐसा सुखद समिश्रण किया है कि उनके नाटकों का गौरव और महत्व अखण्ड हो गया है। अरूण यह मधुमय देश हमारा है।

उसी का परिणाम आज है– भारत अपनी लोक नीति, शिक्षा नीति, धर्म नीति, तथा राजनीति आदि को परस्पर सम्बद्ध करते हुए राष्ट्रीयता से जोड़ करके खोई हुई स्वाधीनता को प्राप्त कर सकते हैं। जातीय शिक्षा, धर्म तथा अध्यात्म ने लोक मानस में क्रान्ति की भावना का संचार किया है। नैतिकता, स्वावलम्बन कर्त्तव्यबोध तथा राष्ट्रीय गौरव धन तथा ऐश्वर्य से बढ़कर हैं। जिस देश की जनता में यदि ये उदात्त सात्विक तथा मानवतावादी गुण विद्यमान हैं। तो वह कभी भी अधिक दिनों तक कोरोना जैसी वैश्विक बीमारी नहीं रह सकती है। इसके सूत्र प्रसाद जी ने दिया है–

1. संकल्प
2. शौर्य
3. स्वाभिमान
4. उच्च कोटि का राष्ट्र प्रेम

जिसका आधार श्रेष्ठता, भव्यता, स्वच्छता तथा उच्चता का रहा है। यही ''चन्द्रगुप्त'' नाटक का आधुनिक संदर्भ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *चन्द्रगुप्त– जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त का बाल जीवन, 1931, पृ0 17*
2. *वही, पृ0 8*
3. *वही, पृ0 35*
4. *वही, पृ0 40*
5. *वही, पृ0 45*
6. *वही, पृ0 81*
7. *वही, पृ0 146*